卐 श्री पार्श्वनाथाय नमः 卐

आचार्य पद्मनंदी विरचित संस्कृत

कलिकुण्ड विधान

का भाषानुवाद

आचार्य महावीरकीर्तिजी महाराज के सुशिष्य

गणधराचार्य १०८ श्री कुन्थुसागरजी महाराज

卐

प्रकाशक :

श्री गणधराचार्य १०८ श्री कुन्थुसागर चातुर्मास समिति

अतिशय क्षेत्र अरिणन्दा (उदयपुर)

कलिकुण्ड विधान

का भाषानुवाद

卐

परम पूज्य १०८ श्री गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज

卐

प्रकाशक :
श्री गणधराचार्य १०८ श्री कुन्थुसागर चातुर्मास समिति
णिन्दा पार्श्वनाथ, उदयपुर

卐

प्रथमावृति : 1000 प्रति

卐

वीर नि. सं. 2519 सन 1993

卐

मूल्य : 7 रूपये मात्र

卐

मुद्रक :
ऋषभ मुद्रणालय
धानमण्डी, उदयपुर
दूरभाष : (0294) 25276

आशीर्वाद

पुण्य प्राप्ति हेतु जिन शासन में आचार्यों ने अनेक विधि-विधान लिखें हैं उनमें से यह एक कलिकुण्ड पार्श्वनाथ मंडल विधान भी है यह विधान पूर्वाचार्यों के द्वारा रचित हैं इस विधान का उल्लेख हस्त लिखित विद्यानुवाद में प्राप्त होता हैं उसी के अनुसार आचार्यों ने लिखा विधान बड़ा प्रभावी है यंत्र-मंत्र से भरा हुआ हैं इसकी साधना करने वाले को अनेक प्रकार के सर्व रोग की शान्ति होती हैं भूत, प्रेत, व्यंतर, डाकिनी, शाकिनी आदि की बाधा स्वयं ही शान्त हो जाती हैं सब प्रकार मन इच्छित कार्य होते हैं धनवान धन को पावे, पुत्रहीन संतान को पावे आदि। इस विधान के तीन यंत्र मिलते हैं एवं मंत्र भी तीन मिलते हैं जिसको जैसी आवश्यकता पड़े वैसा यंत्र मंत्र की साधना करें (1) ज्वरोपशम यंत्र (2) डाकिन्यादि उपशम यंत्र (3) परविद्या छेदन यंत्र साधनाविधिनुसार ही करें। यंत्र को बनवाकर प्राण प्रतिष्ठा करे, यंत्र को स्थापन कर विधिनुसार साढे बारह हजार मंत्र का जाप्य करे फिर मण्डल को रंगों से मांडकर विधान करना फिर दशांग होंमाति देना। इस क्रम से मंत्र सिद्ध हो जाता हैं और साधक को महान फल देता है भक्तों की साधना के लिये और उनकी विशेष लाभ हो इसके लिऐ मैंने इस विधान को संस्कृत भाषा में जो कोल्हापुर (महाराष्ट्र) लक्ष्मी सेन ग्रंथ माला से छपा हुआ था। उसे हिन्दी भाषानुवाद में कर दिया है जो कि भाषा सरल में है कोई भी कर सकता है।

यह विधान भी विदुषी आर्यिका मेरी शिष्या क्षेमश्री के आग्रह से भाषानुवाद में किया है। प्रेस कॉपी करने में उसकी बहुत सहायता रही है।

—परम पूज्य १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागर

प्रस्तावना

मेवाड़ की पूण्य भूमि "अडिण्दा" देवाधिदेव भगवान १००८ श्री पार्श्वनाथ की अतिशय युक्त चतुर्थकालिन प्रतिमा के कारण अतिशय क्षैत्र में रुपान्तरित हो गया है। शिला लेख के आधार पर ५०० वर्ष पूर्व यहाँ काष्ठा संघ के भट्टारकों द्वारा मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई थी। इस क्षैत्र का प्रचार-प्रसार नहीं होने से समाज का उपेक्षित क्षैत्र रहा। तीर्थ क्षैत्र कमेटी जो भारत वर्ष के सभी दिगम्बर जैन तीर्थों की देख-रेख, संरक्षण एवं जीर्णोद्धार करा रही है उनके द्वारा भी यह अतिशय क्षैत्र होने पर भी उपेक्षित रहा है। परम पूज्य समाधि सम्राट आ. महावीरकीर्तिजी महाराज क्षुल्लक अवस्था में यहां पधारे थे।

दो वर्ष पूर्व सन् १९९१ में इस क्षेत्र पर आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज का ससंघ वर्षायोग हुआ उस समय एक विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें देश के सभी भागों से विद्वत-वर्ग एवं श्रेष्ठी वर्ग पधारे तब से समाज में कुछ जागृति आई। मेवाड़ प्रान्त का महान पूण्योदय है कि श्री कन्हैयालालजी लोलावत इस अतिशय क्षेत्र से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित बाठेड़ा कलां ग्राम में जन्मे जो आज भारत के महान सन्तों में से एक गणधराचार्य कुन्थुसागर नाम के प्रख्यात सन्त बनकर २६ वर्ष बाद दिसम्बर १९९२ ई. को पधारे उनकी प्रेरणा से यहां समाज द्वारा एक विशाल देवाधि देव कमठोपसर्ग विजयी पार्श्वनाथ (पद्मावति सहित पार्श्वनाथ) का निमार्ण, कैलाश पर्वत का निर्माण कराकर भगवान आदिनाथ की १८ फीट ऊंची उत्तगं प्रतिमा एवं सुवर्णभद्र कुट बनवाकर भगवान पार्श्वनाथ की २१ फीट ऊंची उत्तगं प्रतिमा व चौबीसी वेदियां विराजीत की गई और विशाल मानस्तम्भ का भी निर्माण किया गया है। जिनकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विशाल स्तर पर जनवरी १९९३ में सम्पन्न हुई है।

इन महान् सन्त का विशाल संघ सहित सन् १९९३ का वर्षायोग भी इसी अतिशय क्षेत्र पर होने से महती धर्म की प्रभावना हो रही है, दर्शनार्थीयों की भीड़ निरन्तर बनी हुई है। और कई विकास कार्य तीव्रगति से चल रहे है।

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा विधान आज उपलब्ध है वह संस्कृत भाषा में जो कोल्हापुर (महाराष्ट्र) लक्ष्मीसैन ग्रन्थमाला से छपा हुआ है। साधारण जन समुदाय इसको शुद्ध नहीं पढ़ सकते है अतः गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज ने इस पूजा विधान का भाषानुवाद कर सरल बना दिया जो जन साधारण के लिये अति उपयोगी सिद्ध होगा। ऐसी मैं आशा करता हूं।

॥ शुभम् ॥

प्रभुलाल मानावत
महामन्त्री
श्री गणधराचार्य कुन्थुसागर चातुर्मास समिति
अडिण्दा, सन् १९९३

विधान की सामग्री

१३१ नारियल एवं अन्य फल
५ किलो चांवल
५०० ग्रा. सुपारी
५०० ग्रा. बादाम
२ किलो नैवेद्य
५० ग्रा. लौंग
१०० ग्रा. इलायची
२०० ग्रा. नारियल गोले की चटकी
केशर १ डिब्बी
५० ग्रा. कपूर
२०० ग्रा. धूप
१०० ग्रा. चिरोजी (चारोली)
१०० ग्रा. मौली (लच्छा)
(पंचरंगा धागा)
२००-२०० ग्रा. पांच प्रकार का रंग

पंचामृताभिषेक का सामान

घी, दूध, दही, सर्वौषधि इक्षुरस
कलशों में डालने के लिए
सवा-सवा रुपये याने सवा छः रुपया
हल्दी की गांठे
धनिया
१०० ग्रा. पीली सरसों

पद्मावती के शृंगार का सामान

साड़ी
चूड़ी
बिन्दी
सिन्दूर
जेवर का सेट
नौ प्रकार के फल
काजल
मेंहदी
दर्पण
सब प्रकार का मेवा
मिश्री
सुपारी
पान
अगरबत्ती
९ प्रकार की मिठाई
१ चांदी का कलश
१ गन्ना (सांठा)
चने भीगे हुए
छत्र, चमर, पताका
फोड़ने के लिए नारियल
फूल माला, इत्र, तेल, चुटेला।

जाप्य के योग्य मन्त्र

(१)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं कलिकुंडदंड स्वामिन्नतुलबलवीर्यपराक्रम-दंडा धीप स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः मम् आत्मविद्यां रक्ष२ परविद्यां छींद २ भिंद २ हूं फट् स्वाहा।

(२)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अर्हं कलिकुंडदंड स्वामिन्नतुलबलवीर्य पराक्रमाय मम् दाह ज्वराद्युप शांति कुरू २ परविद्यां छिंद २ भिंद २ श्रीं ह्रीं ऐं हूं फट् स्वाहा।

(३)

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावातिसहिताय ठभ्ल्व्यूं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मैं क्ष्मौं क्ष्मः कलिकुंडदंडस्वामिन्नतुल बलवीर्यपराक्रम मम् शाकिन्यादि भयोपशम करू २ आत्मविद्यां रक्ष २ परविद्यां छिंद२ भिंद२ हूं फट् स्वाहा।

इन तीनों मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र की १२५ माला जप कर के विधान करे फिर दशांस आहुति देवें। मन्त्र सिद्ध हो जायगा।

इस विधान को सकलीकरण व आद्य सब विधि करके पंचामृताभिषेक करें, कलिकुंड यंत्र अवश्य साथ में रखे जिनेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के साथ, फिर विधान मण्डल पूजा करें, अन्त में हवन कर समाप्त करें।

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ मण्डल पूजा विधान

मंगलाचरण

वन्दों पार्श्व जिनेश को, मन में बहु हर्षाय ।
पार्श्वनाथ भगवान की, पूजा लिखुं बनाय ।।१।।

अपरनाम कलिकुण्ड है, विधि विधान से युक्त ।
भविजन मिल पूजा करो, यो शान्ति से युक्त ।।२।।

ह्रूं कार से युक्त कर, मध्य लिखो स्वमंत्र ।
वलय एक ऊपर करो, पद्मदल चौषट् ।।३।।

एक वलय और करो, दो दल लिखो उस मांय ।
यक्ष और यक्षी लिखो, उस ही दल के मांय ।।४।।

एक वलय और लिखो, अष्ट दल कमल बनाय ।
आठ पिंडाक्षर लिखो, सुन्दर कमल बनाय ।।५।।

अष्ट मातृका देवी का, उस पर कमल बनाय ।
अष्ट दल कमल और कर, लिखो जयादि नाम ।।६।।

इस विध मण्डल बनाय कर, पूजा करो हर्षाय ।
दुःख दारिद्र सभी नशे, संकट दूर पलाय ।।७।।

मन में जो इच्छा करे, होती इच्छा पूर ।
भूत प्रेत व्यंतर भगे, बाधा हो सब दूर ।।८।।

परम पूज्य आचार्य श्री १०८ महावीरकीर्तिजी महाराज

परम पूज्य गणधराचार्य श्री १०८ कुन्थुसागरजी महाराज

कलिकुण्ड यन्त्र

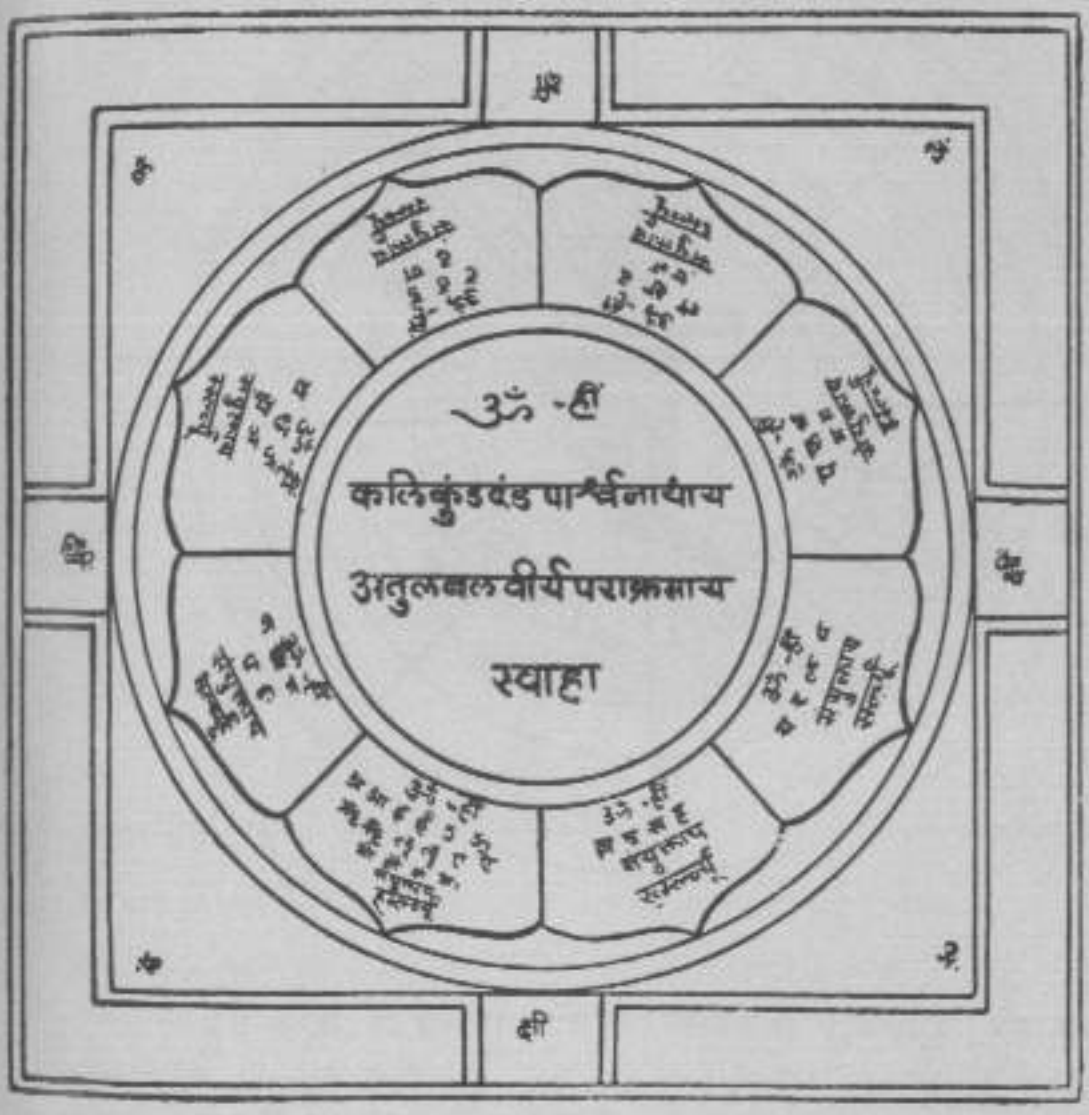

कलिकुण्ड विधान का नक्सा

इस नक्से के अनुसार पंचरंगों से अथवा चांवलों को रंग कर मांडला मांडे, मांडला की वेदी को खुब सुन्दर सजा देवें, एक तरफ मांडले के कम भाग में पद्मावती देवी की मूर्ति स्थापन कर देवें।

मण्डल रचना

नानाविध के वर्ण से, मण्डल करे बनाय।
वेदी को सज्जित करे घन्टा तोरण बंधाय ।।९।।

अशोकादि वृक्ष के पत्ते, देओ बंधाय।
कदली के खंभे करो, मण्डल देओ संजाय ।।१०।।

इस विध मण्डल बनायकर, प्रथम करो अभिषेक।
सकली करण विधि करो, करो विधि एकेक ।।११।।

मंडप शुद्धि करके भविजन, आद्य विधि सब करलो रे।
सब विधि विधान पूर्वक, इसकी पूजा करलो रे ।।१२।।

पार्श्वनाथ कलिकुण्ड का, यह विधान है सार।
पुष्पांजलि क्षेपन करो, पुजक सब नर नार ।।१३।।

पुष्पांजलि क्षेपनं

काशी देश बनारस नगरी, विश्वसेन तुम जन्म लियो।
वामा माता के हो प्यारे, घर-घर मंगलाचार कियो।
इन्द्रादिक देवों ने आकर, पंचकल्याण उत्सव कियो।
हम सब मिल प्रभु भक्ति भाव से,तुमको यहां स्थापन है कियो।१४।

* स्थापना *

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्रावतर अवतर
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्र तिष्ठ २ ठ ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्रमम् सन्निहितो भव२ वषट्

सूवर्ण झारी भरकर लाया प्रभु, तुम ढींग देखो आज।
प्रासुक जल से पूजा करने, तुम चरणों में आया आज।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, जल से पूजा करलों आज।
जन्म मरण अरु जरारोग का, नाश सभी मिल करलो आज।१५।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व जन्म जरा, मृत्यु रोग निर्वाणार्थं जलं निर्वपामिति स्वाहा। ।। जलं ।।

मलयागिर का चन्दन घिसकर, तुम चरणों में आया आज।
शुद्ध सुवासित, जन मन मोहन, गंध को लेकर आया आज।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, गंध से पूजा करलो आज।
देहताप विनाशंन हेतु, सब मिल पूजा करलो आज ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व देहताप विनाशनार्थं चन्दनं निर्वपामिति स्वाहा। ।। चन्दनं ।।

अखण्ड अक्षत लेकर आया, प्रभु चरणों में देखो आज।
खंड खंड सब कर्म का करने, तुम चरणों में आया आज ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की करो, अक्षत से पूजा आज।
अक्षय पद अतिशीघ्र प्राप्त को, सब मिल पूजा करलो आज ।१७।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व अक्षयपद प्राप्त्यार्थं अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा। ।। अक्षतं ।।

फूल चमेली बकुल मोगरा, नाना विध लाया आज।
काम बाण सब नाश करने को, तुम चरणों में आया आज ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, फूल से पूजा करलो आज।
घोर गुण ब्रह्मचारी बनने, सब मिल पूजा करलो आज ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व कामबाण विनाशनार्थं पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा। ।। पुष्पं ।।

नाना विध पकवान बनाया, लाडू पेडा घेवर आज ।
मिष्ट मनोहर सुवर्ण थाल में, भरकर लाया देखो आज ।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, चरु से पूजा करलो आज ।
क्षुधा वेदनि नाश करन को, सब मिल पूजा करलो आज ।१९।

ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व क्षुधा वेदनी नाशार्थं नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा। ।। नैवेद्यं ।।

कंचन से ये दीप सजाया, उसमें घृत भर दीना आज ।
दीप जलाकर प्रभु चरणों में, मैंने रख दीना हे आज ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु को, दीप से पूजा करलो आज ।
मोहान्धकार का नाश करनको, सब मिल पूजा करलो आज ।२०।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनि प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व मोहान्धकार नाशार्थं दीपं निर्वपामिति स्वाहा। ।। दीपं ।।

अगर तगर सुवासित चन्दन, आदि कूट लीने मैं आज ।
शुद्ध अग्नि में खेय खेय कर, वासित कीन्हा मन्दिर आज ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, धूप से पूजा करलो आज ।
अष्ट कर्म के दहन करन को, सब मिल पूजा करलो आज ।।२१।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय सर्वभय व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व अष्ट कर्म दहनार्थं धूपं निर्वपामिति स्वाहा। ॥ धूपं ॥

केला, दाडिम, आम आदि सब प्रासुक फल लीन्हे मैं आज।
मिष्ट मनोहर पक्व पक्व ले, सुवर्ण थाल भर लीन्हे आज॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, फल से पूजा करलो आज।
मोक्ष लक्ष्मी के सुख पाने, सब मिल पूजा करलो आज ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व मोक्षफलं प्राप्यर्थं फलं निर्वपामिति स्वाहा। ॥ फलं ॥

जल चन्दन अक्षतादि ले, अष्ट द्रव्य सजाया आज।
सुवर्ण थाल में रख कर मैंने, मन को शुद्ध कीन्हा है आज॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, वसुद्रव्य से पूजा करलो आज।
अनर्घ्य पद के प्राप्ति हेतु, सब मिल पूजा करलो आज ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व अनर्घ्य पद प्राप्यर्थं अर्घं निर्वपामिति स्वाहा। ॥ अर्घं ॥

सुवर्ण झारी से प्रभु जल की धारा देत।
जग की शान्ति के लिये शान्ति धारा देत ॥२४॥

॥ शान्ति धारा ॥

पुष्पों को भर अंजुली में दीन्हा चरण चढ़ाय।
कामबाण नश जाने को पुष्पाञ्जलि चढ़ाय ॥२५॥

॥ परि पुष्पाञ्जली क्षिपेत् ॥

मन्त्र २७ बार जपें

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मम् सर्व विघ्नाय शान्ति कुरु-२ नमः स्वाहा।

॥ जयमाला ॥

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की जयमाला लिखुं बनाय।
सब विध सुख की प्राप्ति हो, मन में आनन्द छाय ॥२६॥

जय पार्श्व प्रभु तुम हो सहाय, भविजन को सुख देते महान।
जय गर्भ जन्म तप, ज्ञान धार, वसु कर्म नाश तुम मोक्ष धार॥

जय पार्श्व जिनेन्द्र दया निधान, भवि कानन नाशन हार जान।
काशी में जन्मे तुम महान्, हरि आप आय उत्सव जु कीन॥

मेरु पर लेकर देव जाय, इन्द्रादिक ने मिल करी सहाय।
पञ्च कल्याणक को धारो महान्, तुम धर्म तीर्थ नायक महान्॥

कुछ निमित्त पाय तुम भये उदास, लोकान्तिक ने कीन्हा प्रयास।
प्रभु तुमने दीक्षा धार लीन, अति कठिन घोर तप में जुलीन।
प्रभु तुमने केवल लक्ष्मी पाय, भविजन को तुम बोधन कराय॥

तुम वाणी सुन भविजन अनेक, भवदधि से उत्तरे भवि अनेक।
तुम अष्ट कर्म जु चूर कीन्ह, क्षण में तुमने सुख लिन्ह लिन्ह॥

हम तुम चरणों में आय आय, करे भक्तिभाव आनन्द छाय।
हम सेवक तुम चरणों में आय, हमरे दुःख मेटो तुम सहाय॥

तुम तीन लोक अधिपति कहाय, हम पामर तुम शिवपति कहाय।
'कुन्थु' करता तुमको पुकार, शिवपुरी का दे दो अधिकार ।।

चरण पड़ूँ वन्दन करुँ, तुम चरणों में आज ।
मोक्ष लक्ष्मी को पाय कर, सुख पाऊँ मैं आज ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व जयमाला अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

कमल केतकी और गुलाब की अंजुली भर चढ़ाय दिया ।
पुष्पाञ्जलि से पुष्प चढ़ाय कर, मन में मैंने शान्ति लिया ।।

मण्डलोपरि पुष्पाजलि क्षिपेत् ।

मण्डल पर अर्घ्य चढ़ाना

जल, चन्दन, अक्षत, पुष्पादि लेकर आया मैं प्रभुवर ।
अष्टद्रव्य से थाल सजाकर, अर्घ्यं चढ़ाऊँ मैं प्रभुवर ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म को नाश किया ।
कामदेव सम देह प्राप्त कर, तुमने सबको शान्ति दिया ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय काम देव सम सुन्दर शरीर सहिताय जलादि अर्घं ।।१।।

जल चन्दनादि वसु द्रव्य सजाकर, लेकर आया हूं प्रभुवर ।
तुम चरणों में अर्घ चढ़ाकर, मुझ को शान्ति मिले प्रभुवर ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म का नाश किया ।
अतिसुवासित देह प्राप्त कर, तुमने सबको शान्ति दिया ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सुगन्ध शरीर अतिशय प्राप्ताय जलादि अर्घं ।।२।।

पसेव रहित शरीर को पाकर, तुमने अतिशय प्रकट किया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म को नाश किया।
पसेव रहित देह प्राप्तकर, तुमने सबको शान्ति दिया॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय पसेव रहित शरीर प्राप्ताय जलादि अर्घं॥३॥

मल मूत्रों से रहित देह है, दिव्य देह को प्राप्त किया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया।
कमल दिव्य देह को पाकर, तुमने सबको शान्ति दिया॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मलमूत्र रहित देह प्राप्ताय जलादि अर्घं॥४॥

हित मित प्रिय वचन बोलकर, सब के मन को लुभाय दिया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया।
हित मित प्रिय वचन बोलकर, तुमने सबको शान्ति दिया॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय हित मित प्रिय वचन प्राप्ताय जलादि अर्घं॥५॥

अप्रमाण शक्ति के धारक, सब शक्ति को धार लिया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया।
अतुल बल शक्ति को धारकर, तुमने सबको शान्ति दिया॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अतुल बल शक्ति सहिताय जलादि अर्घं॥६॥

श्वेत रक्त है तव शरीर में, सब जीवों को प्रेम दिया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
वात्सल्यता के तुम प्रतीक हो, तुमने सबको शान्ति दिया ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय शुक्ल रक्त शरीर सहिताय जलादि अर्घं ।।७।।

एक हजार आठ शुभ लक्षण, तुमने देखो धार लिया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म को नाश किया।
सहस्त्र अष्ट लक्षण का धारो, तुमने सबको शान्ति दिया ।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अष्टोत्तर सहस्त्र शुभ लक्षण सहिताय जलादि अर्घं ।।८।।

सम चतुरस्त्र संस्थान को धारा, जग का तुमने हित किया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया।
सम चतुरस्त्र शरीर को पाकर, तुमने सबको शान्ति दिया ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सम चतुरस्त्र शरीर सहिताय जलादि अर्घं ।।९।।

वज्र सरीखा देह तुम्हारा, तुमने जग उपकार किया।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ।।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया।
वज्र वृषभ सहन को पाकर, तुमने सबको को शान्ति दिया ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय वज्र वृषभ नाराच संहनन सहिताय जलादि अर्घं ।।१०।।

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
योजन शत एक में सुभीक्ष, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय योजन शत एक में सुभिक्षाय जलादि अर्घं॥११॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
आकाश गमन से युक्त, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय आकाश गमन आतिशय सहिताय जलादि अर्घं॥१२॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
चहुमुख दिखते हैं पूर्ण, घाति नशावत है।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय चहूं मुख अतिशय युक्ताय जलादि अर्घं॥१३॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत है।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत है॥
अहिंसा धर्म से युक्त, घाति नशावत है।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत है॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अहिंसा धर्म युक्ताय जलादि अर्घं॥१४॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत है।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
उपसर्ग रहित है आप, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय स्वपर उपसर्ग रहिताय जलादि अर्घं॥१५॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
नहीं करते कवलाहार, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय कवलाहार रहिताय जलादि अर्घं॥१६॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
सर्व विद्या से हो युक्त, घाति नशावत है।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व विद्या अधिश्वराय जलादि अर्घं॥१७॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
सर्व रोगादिक से रहित, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व रोग शोक रहित नख केश वृद्धि रहिताय जलादि अर्घं॥१८॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत है।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत है॥
प्रतिछाया रहित शरीर, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय प्रतिछाया रहित शरीराय जलादि अर्घं॥१९॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत है।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं॥
नेत्रादि हलन से रहित, घाति नशावत हैं।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय नेत्रादि भौं हलन रहिताय जलादि अर्घं॥२०॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत है॥
अनक्षर भाषा सहित, घाति नशावत है।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत है॥२१॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनक्षर भाषा सहिताय जलादि अर्घं॥२१॥

दोहा

करते सबसे मैत्री तुम, सबके मित्र हो आप।
अर्घं बनाकर पूजहूं, वन्दन तुमको आज॥२२॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय परस्पर मैत्री भाव सहिताय जलादि अर्घं॥२२॥

सर्व दिशा निर्मल बनी, मल नहीं कहीं अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व दिशा निर्मलता सहिताय जलादि अर्घं ।।२३।।

सर्व आकाश निर्मल बना, मल नहीं कहीं अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ।।२४।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व आकाश निर्मलता सहिताय जलादि अर्घं ।।२४।।

षट् ऋतु के फल सब फले, शोभा नहीं अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ।।२५।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय षट् ऋतु के फल फूल सहित अतिशयाय जलादि अर्घं ।।२५।।

सर्व भू मण्डल शान्ति बनी, अशान्त नहीं कही अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूँ, वन्दन हैं परमेष ।।२६।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व भू मण्डल शान्ति सहिताय जलादि अर्घं ।।२६।।

चरण युगल नीचे बने, कमल बने जिनेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ।।२७।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय चरण युगल तल कमल अतिशय युक्ताय जलादि अर्घं ।।२७।।

देवनभ जयकार करे, जप तुम जिनेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ।।२८।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय आकाश में देव जय जयकार अतिशयाय जलादि अर्घं ।।२८।।

मन्द सुगन्ध वायु चले, जय हो श्री जिनेश ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ।।२९।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मन्द सुगन्ध वायु चलन अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।२९।।

गन्धोदक की वृष्टि हो, जय जय श्री जिनेश ।
अर्घं बनाकर पूजहूँ, वन्दन हे परमेष ।।३०।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय गन्धोदक वृष्टि अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३०।।

आठो द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों लियो ।
भूमि कंटक रहिताय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३१।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय भूमि कंटक रहिताय जलादि अर्घं ।।३१।।

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सो लियो ।
जन मन आनन्द कार, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३२।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय जन मन आनन्दकारक अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३२।।

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो ।
धर्म चक्र सहिताय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३३।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय धर्म चक्र अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३३।।

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सो भजो ।
मंगल द्रव्य दिखाय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३४।।

ॐ ह्रीं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अष्ट मंगल द्रव्य अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३४।।

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो।
वृक्ष अशोक दिखाय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३५।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अशोक वृक्ष अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३५।।

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो।
सिंहासन पर जिनराज, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३६।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सिंहासन अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३६।।

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो।
तीन छत्र किराय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३७।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय तीन छत्र अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३७।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
भामण्डल पिच्छवार, रत्नत्रय निधि भजो ।।३८।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय भामण्डल अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।३८।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य, रत्नत्रय निधि को भजो ।।३९।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घं ।।३९।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
सुर पुष्प वृष्ठि प्रातिहार्य, रत्नत्रय निधि को भजो ।।४०।।

ॐ ह्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सुर पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घं ।।४०।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
चौषट् चमर ढुराय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।४१।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय चौषट् चमर अतिशय प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घं ।।४१।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
देव दुंदुभि बजाय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।४२।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय देव दुंदुभि प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घं ।।४२।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
अनन्त ज्ञान धराय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।४३।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त ज्ञान अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ।।४३।।

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो।
अनन्त दर्श धराय, रत्नत्रय निधि को भजो ।।४४।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त दर्शन अन्तरंग लक्ष्मी सहिताय जलादि अर्घं ।।४४।।

अनन्त सुख के तुम धारी, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थंकर पूजें, करुं मुक्ति की सेवा ।।४५।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त सुख अन्तरंग लक्ष्मी सहिताय जलादि अर्घं ।।४५।।

अनन्त वीर्य के तूम धारी, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेईसवें तीर्थङ्कर पूजें, करुँ मुक्ती की सेवा ।।४६।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त वीर्य अन्तरंग लक्ष्मी सहिताय जलादि अर्घं ।।४६।।

आप जन्म रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा ।।४७।।

ॐ ह्री श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय जन्म रोग रहिताय जलादि अर्घं ।।४७।।

जरा रोग से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ।।
पार्श्वनाथ जान जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा ।।४८।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय जरा रोग रहिताय जलादि अर्घं ।।४८।।

तृषा रोग से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ।।
पार्श्वनाथ जान जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा ।।४९।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय तृषा रोग रहिताय जलादि अर्घं ।।४९।।

क्षुधा व्याधि से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा॥५०॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय क्षुधा व्याधि रहिताय जलादि अर्घं।५०।

विश्मय दोष रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों में देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा॥५१॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय विश्मय दोष रहिताय जलादि अर्घं।५१।

सर्व दुःखों से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा॥५२॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व दुःखों रहिताय जलादि अर्घं॥५२॥

सर्व रोग से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा॥५३॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व रोग रहिताय जलादि अर्घं॥५३॥

सर्व शोक से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा॥५४॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय शोक रहिताय जलादि अर्घं॥५४॥

आठ मदों से रहित हो गये, हम लाये परिवारा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करुँ मुक्ति की सेवा ।।५५।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्वमद रहिताय जलादि अर्घं ।।५५।।

सर्व मोह से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, मैं पूजूं जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ।।५६।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मोहनीय कर्म रहिताय जलादि अर्घं ।५६।

सर्व निद्रा से रहित हो गये, शरण गहीं जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ।।५७।।

ॐ ह्री श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व निद्रावरण कर्म रहिताय जलादि अर्घं ।।५७।।

सर्व चिन्ता से मुक्त हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेईसवें तीर्थङ्कर पूजें, मिले मुक्ति की मेवा ।।५८।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व चिन्ता रहिताय जलादि अर्घं ।।५८।।

सर्वस्वेद से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ।।५९।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्वस्वेद(पसीना)रहिताय जलादि अर्घं ।५९।

सर्व पीडा से मुक्त हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, में पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवों तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ।।६०।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व पीड़ा रहिताय जलादि अर्घं ।।६०।।

मरण रोग से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवों तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ।।६१।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मरण रोग रहिताय जलादि अर्घं ।।६१।।

राग द्वेष से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवों तीर्थङ्कर पूजे मिले मुक्ति की मेवा ।।६२।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय राग द्वेष रहिताय जलादि अर्घं ।।६२।।

सर्व भय से मुक्त हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवों तीर्थङ्कर पूजूँ, मिले मुक्ति की मेवा ।।६३।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व भय रहिताय जलादि अर्घं ।।६३।।

चौषट् गुण से युक्त हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ।।
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवों तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ।।६४।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय छियालीस गुणों से युक्त, अठारह दोष रहिताय जलादि अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ।।६४।।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ।

स्तोत्र

(हाथ जोडकर स्तुति पढ़े)

उपसर्गों को दूर करके, सब कर्मों का नाश करो।
विषहर हो प्रभु पार्श्व जिनेश्वर, सबका मंगल काम करो ॥

विषहर फुलिग मंत्र तुम्हारा, कष्ट में धारण करके नर।
उसके ग्रह रोगदिक मारी, दुष्टादिक जाये क्षण में भग ॥

पार्श्व प्रभु का नाम स्मरण से, फल होता है अति भारी।
नर तिर्यंचादिक जीव भी पाते, सुख शान्ति है अति भारी ॥

चिन्तामणि सम नाम तुम्हारा, कल्प वृक्ष सम हो भारी।
नाम मात्र जपने से प्रभुवर, स्थान पाते है अजरामर ॥

भक्ति भाव से इस स्तोत्र का, स्मरण करते भविक जन।
उसको मिलता भव भव में है, ज्ञान समृद्धि पास जिनन्द ॥

। इति ।

धरणेन्द्र का अर्घ

नागों के हो नाग स्वामी, धरणेन्द्र तुम्हारा नाम है।
पाताल में जो भवन शोभे, उसमें तुम्हारा वास है ॥
भक्त जनों की सेवा करते, दु ख को हरते खास है।
वसु द्रव्य से मैं अर्घ करता, स्थापना इस स्थान है ॥१॥

ॐ ह्रां क्रों ह्रीं हे पातालवासी धरणेन्द्र देवाय सपरिवार सहिताय इदम् अर्घं पादं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, चरु दीपं, धूपं, फलं, अर्घं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे यजामहे अर्घं समर्पयामि स्वाहा ॥१॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत

पद्मावती पूजा

पद्मावती सब दुःख हरणी, तुम जग की जगदम्बा हो।
भक्त जनों के सब सुख करणी, हे माता जगदम्बा हो ।।
आह्वानन कर स्थापूँ मैं तुमको, आकर तिष्ठो माता यहाँ।
मैं तुमको ध्याऊँ, दुःख मिटाऊँ, संकट टालो माता यहाँ ।।२।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती जगदम्बे माता सपरिवार देवा अत्रागच्छ २
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती जगदम्बे माता सपरिवार देवा अत्रतिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती जगदम्बे माता सपरिवार देवा अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सनिधिकरणं।

गंगाजल का नीर भराऊँ, प्रासुक लेकर आया हूं।
पद्मावती देवी के चरणों, धार दे हर्षाया हूं ।।
पद्मावती देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूं।
इसीलिये हे माता तेरे आज, चरणों में आया हूं ।।३।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती.....जलं समर्पयामि ।। जलं ।।३।।

मलयागिरी का चन्दन घीसकर,शुद्ध सुगन्धित लाया हूं।
पद्मावती देवी के चरणों मैं, अर्पण कर हर्षाया हूं ।।
जगदम्बे देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूं।
इसीलिये हे माता तेरे आज, चरणों में आया हूं ।।४।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती..... .....चन्दनं समर्पयामि ।।४।।

अखणु तन्दुल जल से धोकर थाल सजाकर लाया हूं।
पद्मावती देवी के चरणों मैं, अर्पण कर हर्षाया हूं ।।
जगदम्बे देवी की पूजा, में करके हर्षाया हूं।
इसीलिये हे माता तेरे, आज चरणों में आया हूं ।।५।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं से पद्मावती देवी.....अक्षतं समर्पयामि ।।५।।

नानाविध के पुष्प मंगाकर,आज यहाँ पर लाया हूँ ।
पद्मावती देवी के चरणों, अर्पण कर हर्षाया हूँ ।।
जगदम्बे देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूँ ।
इसीलिये हे माता तेरे आज चरणों में आया हूँ ।।६।।

ॐ ह्रां क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी.....पुष्पं समर्पयामि ।।६।।

घेवर, पूड़ी और जलेबी थाली भरकर लाया हूं ।
दिव्य चरु से अचन करके, सुख संपत्ति को पाया हूँ ।।
दु ख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
नैवेद्य की पूजा से माता, सुख सभी मिल जाते है ।।७।।

ॐ ह्रां क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी नैवेद्यं समर्पयामि ।।७।।

घृत का दीपक लेकर माता तुम चरणों में आया हूँ ।
दिव्य प्रकाश की इच्छा लेकर तुम चरणों में आया हूँ ।।
दुःख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते है ।
दीपक की ज्योति से माता, सुख सभी मिल जाते हैं ।।८।।

ॐ ह्रां क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी दीपं समर्पयामि ।।८।।

धूप दशांगो लेकर माता तव चरणों में आया हूँ ।
सभी प्रकार के कर्मों को मैं आज मिटाने आया हूँ ।।
दुःख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
धूप दशांगी खेने से माँ, सुख सभी मिल जाते है ।।९।।

ॐ ह्रां क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी धूपं समर्पयामि ।।९।।

केला, आम, सुपारी आदि ले सुवर्ण थाल भर आया हूँ ।
दिव्य मधुर, सुपक्व फलों को लेकर अब मैं आया हूँ ।।
दुःख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
दिव्य फलों की पूजा से माँ सुख सभी मिल जाते हैं ।।१०।।

ॐ ह्रां क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी दिव्य फलं समर्पयामि ।।१०।।

जल चन्दनादि वसु द्रव्य सजाकर, तुम ढिग लेकर आया हूं ।
अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर तुम अर्चन को आया हूं ।।
दु ख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
अष्ट द्रव्य के अर्चन से, माँ सुख सभी मिल जाते हैं ।।११।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी अष्ट द्रव्यं समर्पयामि ।।११।।

जल सुगन्धित लाय के, पद्मावती चरण चढ़ाय के ।
चरणों में शीश नवाय के, सभी के दु ख नशाय के ।।१२।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हें पद्मावती देवी पाद्यं समर्पयामि । जलधारा छोडे ।।१२।।

पञ्चामृतादि सद द्रव्यों से, अभिषेक आपका कर दीन्हा ।
आपने माता सब जीवों का, दुःख दारिद्र हर लीन्हा ।।१३।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी पञ्चामृत द्रव्य समर्पयामि ।।१३।।

मिष्ट मधुर इक्षु दण्ड से आपकी पूजा कर दीन्ही ।
माता आपने आज सभी की इच्छा पूरी कर दीन्ही ।।१४।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी इक्षु दण्डार्चनं ।।१४।।

चना फुलाकर लेकर आया, देवी की पूजा को आज ।
इसकी पूजा से मिलता, सुख, शान्ति, धन, समृद्धि आज ।।१५।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी चरण का अर्चनं ।।१५।।

थाली भरकर पकवानों की तव चरणों में आया आज ।
पकवानों की पूजा से माँ मिटे जगत दुःख सन्ताप ।।१६।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी पकवानार्चनं ।।१६।।

नाना विद्य के वस्त्रों को मैं लेकर आया देवी आज ।
वस्त्रों की पूजा से माता, दुःख दारिद्र सभी मिट जाय ।।१७।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी दिव्य वस्त्रा अर्चनं ।।१७।।

केयुर, कुण्डल, हार, मुकुटादि भूषण से करूं पूजा आज ।
आभूषण से पूजा करके, पाऊँ धन वैभव को आज ॥१८॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी, षोडसाभरणं अर्चनं ॥१८॥

कुंकुम, केशर, गन्धसु लेकर, तिलक लगाता तुमरे भाल ।
दिव्य ज्ञान हो जावे मेरा, मिटे सर्व जगत सन्ताप ॥१६॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी नीलकार्चनं ॥१६॥

छत्र, चँवर, मंगल, द्रव्यों को लेकर आया माता आज ।
मंगल की मैं कामना करता, होवे जगत में शान्ति आज ॥२०॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी छत्र चामरादि अर्चनं ॥२०॥

शुद्ध सुवर्ण का कलश बनाकर, प्रासुक जल भर ले आया ।
सुवर्ण कलश के अर्चन से, माँ सुख शान्ति को हमने पाया ॥२१॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी सुवर्ण कलशार्चनं ॥२१॥

निर्मल दर्पण लेकर आया, स्वच्छ अति निर्मल देखा भाव ।
दर्पण की निर्मलता कहती, करो सभी मिल निर्मल भाव ॥२२॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी दर्पणार्चनं ॥२२॥

वस्त्रादिक की झण्डी लेकर, तव चरणों में आया आज ।
इसी पूजा से मिटता है, इस जगत के सभी सन्ताप ॥२३॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी पताकार्चनं ॥२३॥

नाना विध का वाद्य बजाकर, नाचूँ गाऊँ देखो आज ॥
तीन प्रदक्षिणा देकर माता, तुमको नमन मैं करूँ ॥२४॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी वाद्य, नृत्य, गीत, प्रदक्षिणा, नमस्कारं ॥२४॥

वसुविध द्रव्यादि को लेकर, करता हूं मैं पूजा आज ।
अष्ट महा निधि को पाने, आया हूं चरणों में आज ॥२५॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी अर्घ्यं समर्पयामि ॥२५॥

। शान्तिधारा । पुष्पाञ्जलि ।

चौबीस आयुधों के प्रत्येक अर्घ्यं ।
द्वितीय कोष्टोपरी अर्घं चढ़ावे ।

प्रथम पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें ।

प्रथम हाथ में खड्ग जु शोभे, माता तेरे देखो हाथ ।
दुष्टों का निवारण करके, शान्ति देती देखो मात ।।१।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं प्रथम हाथ में खड्ग शोभित पद्मावती देवी को अर्घं ।।१।।

कान्डा युद्ध को धारण करके, शौभित होती माता आज ।
दूजे हाथ की शोभा इससे, मेटो जगत के सभी सन्ताप ।।२।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं दूजे हाथ में कांडा युद्ध धारिणी हे पद्मावती अर्घं समर्पयामि ।२।

तीजे हाथ में मूसल धारकर धर्म की सेवा करती हो ।
मूसल धारिणी कहलाती, जग को शान्ति करतो हो ।।३।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं हे मूसल धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।३।।

चौथे हाथ में हल जो शोभे, हलायुधि कहलाती हो ।
हे जगदम्बे देवी तुमतो, सबकी व्याधा हरती हो ।।४।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं हे हलायुद्ध धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।४।।

सर्पायुद्ध को कर में लेकर, दुष्ट बंधन का काम करो ।
हे पद्मावती देवी तुमतो, दुजन जन का मान हरो ।।५।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं हे सर्पायुद्ध धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।५।।

वन्हि के आयुद्ध को धारो, हे जगदम्बे माता तुम ।
षष्टम हाथ का आयुध जानो, नाश करो पापों को तुम ।।६।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं वन्हि आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।६।।

चक्रायुद्ध को धारकर, करे दुष्ट संहार ।
सप्तम हो आयुधपति, करो धर्म प्रचार ।।७।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं चक्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।७।।

शक्ति शस्त्र हे महिमा वान, तुम हो अष्टम आयुधवान।
दुष्ट देख सब दिश भग जाय, ऐसी तुम हो महिमावान ।।८।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं शक्ति आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।८।।

तारा युधकर धारकर, करे प्रकाश महान।
इस आयुध का काम है, मिटे दुःख सन्ताप ।।९।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं तारा आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।९।।

रत्नत्रय का चिन्ह है, त्रिशुल आयुध जान।
दशम हाथ का शस्त्र है, करे कर्म संहार ।।१०।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं त्रिशुल आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।१०।

खपर हाथों धारकर, ग्यारम आयुध धार।
भिक्षा माँगे प्रेम की, प्रेम की ज्योती जलाये ।।११।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं खपर आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।११।।

पद्मावती जगत्पूज्य करो विश्व कल्याण।
डमरु आयुध धारकर, करो धर्म प्रचार ।।१२।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं डमरु आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।१२।।

नाश पाश को धारकर, नाग रुप बन जाय।
यह बन्धन अति विकट है, बन्धन छूटे नाय ।।१३।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं नागपाश धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।१३।।

डण्डा को ले हाथ में शोभे अति महान।
दुष्ट जन दण्डित करे, हरे सभी का मान ।।१४।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं डण्डायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।१४।।

पाषाण को ले हाथ में, शोभे अति महान।
दुष्टों के सिर पर पड़े, हरे सभी का मान ।।१५।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं पाषाण आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।१५।

मुद्गर को ले हाथ में करें दुष्ट संहार।
अज्ञानी भागे फिरे, हरे सभी का मान ।।१६।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं मुद्गर आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।१६।

फरसा को ले हाथ में करे दुष्ट संहार।
दुष्ठ जन भागे फिरे, हरो सभी का मान ।।१७।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं फरसा आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।१७।

कमलायुध से सहित हो, कोमल कमल महान्।
इस आयुध का काम है, शोभा करे महान् ।।१८।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं कमलायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।१८।।

अंकुश आयुध धारकर, अंकुश में ले आज।
जग जीवों का हित करे, करे जीव उद्धार ।।१९।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं अंकुश आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पमामि ।१९।

आम्रयुध को धारकर छाया सम बन जाय।
शीतलता प्रदान करे, मिटे जगत सन्ताप ।।२०।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं आम्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।२०।।

छत्रायुध को धारकर छत्रपति कहाय।
छत्र सम शोभे अति, एक छत्र हो जाय ।।२१।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं छत्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।२१।।

वज्रायुध को धारकर वज्रसम बन जाय।
इस आयुध का काम है, दुर्जन करे संहार ।।२२।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं वज्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।२२।।

वृक्षायुध से होत हैं शीतलता महान।
जग के जीवों को मिले सुख शान्ति महान् ।।२३।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं वृक्षायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।।२३।।

जीवों को वरदान दे, वरद आयुध जान।
माला भी कर में फिरे, करे जीव कल्याण ।।२४।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं वरदमाला युद्ध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घं समर्पयामि ।२४।

चोबीस भुजा जगदम्बि के, करो जगत् कल्याण।
अपने हित के कारणे, कीन्ही पूजा आज ।।२५।।

ॐ ग्रां क्रौं ह्रीं चौबीस भुजा में स्थित चतुर्विंशति आयुध सहित हे पद्मावती देव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि ।।२५।।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत

कलिकुण्ड यंत्र प्राण प्रतिष्ठा

मन्त्र

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह्रीं क्रौं म्ल्व्र्यूं नमः परमात्मने हं सः क ख ग घ ङ तत्पुरुषाय अघोराय ह्रूं र्म्ल्व्र्यूं अग्निदेवतायाः प्राणाः ट ढ ड ढ ण जातत्पुरुषाय ह्रूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्थलदेवतायाः प्राणः ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं जल देवतायाः प्राणाः ॐ य र ल व श ष स ह अनन्तकेवलिने ह्रूं घ्म्ल्व्र्यूं सर्वदेवतायाः प्राणाः ॐ नमः सर्वविद्याधिपतये ह्रां र्म्ल्व्र्यूं सर्व जीव इह स्थित यंत्र तंत्र मंत्र पंत्राग्रेषु यंत्र रुप स्तथा तिष्ठ २ ठः ठः मम् यंत्र मंत्र तंत्राणां काय वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसना स्पर्शनेंद्रियाणि रुचितांगानि तिष्ठन्तु ऐं क्षौं ॐ नमः स्वाहा।

इस मन्त्र को सात बार पढ़कर यंत्र पर पुष्प क्षेपण करे।

यंत्र पूजा

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करुँ हर्षाय ।
आह्वानन स्थापन करुँ, तीष्ठा यहाँ पर आय ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डयन्त्राय अत्र आगच्छ २ । अत्र तिष्ट २ ठः ठः । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।।

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करुँ हर्षाय ।
जल से मैं अर्चा करुँ मन में बहु हर्षाय ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं.....जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा ।।२।।

कलिकुण्ड श्री यंत्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
चन्दन से अर्चा करुँ, मन में बहु हर्षाय ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीं .....चन्दनं निर्वपामिति ।।३।।

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करुँ हर्षाय ।
अक्षत् से अर्चा करुँ मन में बहु हर्षाय ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं.....अक्षतं निर्वपामिति ।।४।।

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करुँ हर्षाय ।
पुष्पों से अर्चा करुँ, मन में बहु हर्षाय ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीं.....पुष्पं निर्वपामिति ।।५।।

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करुँ हर्षाय ।
नैवेद्य से पूजा करुँ, मन से बहु हर्षाय ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं.....नैवेद्यं निर्वपामिति ।।६।।

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करुँ हर्षाय ।
दीपों से पूजा करुँ, मन में बहु हर्षाय ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं.....दीपं निर्वपामिति ।।७।।

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करु हर्षाय।
धूपों से पूजा करु, मन में बहु हर्षाय ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं...............................धूपं निर्वपामिति ॥८॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करु हर्षाय।
फलों से पूजा करु, मन में बहु हर्षाय ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं...............................फलं निर्वपामिति स्वाहा ॥९॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करु हर्षाय।
अर्घ चढ़ाकर पूजहूं, मन में बहु हर्षाय ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं...............................अर्घं निर्वपामिति ॥१०॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।

पींडाक्षर पूजा

बगीया से पुष्पों को लाया, ताजा ताजा चुनकर।
पुष्पाञ्जलि मैं करने आया, मन में हर्षित होकर ॥१॥

तृतीय। कोष्टोपरी पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

हपींडाधीश्वर की पूजा मन में कर हर्षाऊँ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥२॥

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः आं क्रों हपिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधीश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखं पूरय पूरय हपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ॥२॥

भंपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥३॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूँ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः आं क्रों भं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दंडाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय मम् अभिमत सुख पूरय-२ भंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ॥३॥

मंपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊं ।।४।।

ॐ ह्रीं म्ल्व्र्यूं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः मां क्रौं मंपिंडाधिठिष्त कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल बीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय मम् अभिमत सुखं पूरय २ मंपिण्डाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ।।४।।

रंपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊं ।।५।।

ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्यूं रां रीं रूं रौं रः रं म्रां क्रौं रं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतूल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय मम् अभिमत सुखम् पूरय २ रंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ।।५।।

घं पींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊं ।।६।।

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः म्रां क्रौं घं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय मम् अभिमत सुखम् पूरय २ घंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ।।६।।

झंपिंडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊं ।।७।।

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः म्रां क्रौं झं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधीश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय मम् अभिमत् सुखम् पूरय २ झंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ।।७।।

संपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर सुख शान्ति मैं पाऊं ।।८।।

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं स्रूं सौं स्रः ग्रां क्रों संपिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधीश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनो प्रभृति घोरोपसर्गान् अपमय अपनय मम् अभिमत सुखम् पूरय २ संपिंडाधिष्ठताय जलादि अर्घं ।।८।।

खंपिंडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊं ।।९।।

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः ग्रां क्रों खंपिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधीश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय मम् अभिमत् सुखम् पूरय २ खंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घं ।।९।।

अष्ट पींडाक्षर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊं ।।१०।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हंपिंडादि खंपिंडात्यष्ट पिंडाक्षरे भ्यो पूर्ण अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ।।१०।।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

चतुर्थ कोष्टोपरी अष्ट मातृ की पूजा

ब्राह्मी, माहेश्वरी तथा कौमारी वैष्णवी भी हैं ।
वाराही, महेन्द्राणी चामुण्डा, श्री लक्ष्मी भी मातृका है ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्ट मातृ का प्रत्येक पूजा प्रपिज्ञापनाय पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।१।।

मण्डल पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करे ।

पद्मप्रभा को धारण करती पद्म का वाहन है तेरा।
मूसल का आयुध धारण करती, ब्रह्माणी है नाम तेरा ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आये, माता लेते नाम तेरा।
सर्वविघ्न की शान्ति करणे, सुख पाते ले नाम तेरा ।।२।।

ॐ ह्रीं पद्मरागवर्णे मूसलायुध धारिणी पद्मवाहने सचिन्ह परिवारे हे ब्राह्मणी देवी जलादि अर्घं समर्पयामि ।।२।।

भिंदिपाल का आयुध सोहे, शाकवर वाहन हे माता।
श्वेतवर्ण की प्रभा हे तेरी, नाम माहेश्वरी हे माता ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आये, पूजा करने हे माता।
दुष्ट रोग की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ।।३।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे भिंदिपालायुधे शाक्वर वाहने सचिन्ह परिवारे हे माहेश्वरी देवी जलादि अर्घं समर्पयामि ।।३।।

खड्गायुध को धारण करके, विद्रुम वर्ण का तन सोहे।
मयूर वाहन को धारण करके, नाम कौमारी तुम सोहे ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता।
क्रूर विघ्नों की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ।।४।।

ॐ ह्रीं विद्रूमवर्णे खड्गायुधेशिखि वाहने सचिन्ह परिवारे हे कौमारि देवी जलादि अर्घं समर्पयामि ।।४।।

नीलप्रभा को धारण करके, चक्र का आयुध हे माना।
गरूड वाहन को धारण करके, वेष्णवी देवी हे माता ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आता, पूजा करने हे माता।
ग्रह विघ्नों की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ।।५।।

ॐ ह्रीं चकनिल प्रभे (इन्द्रनील वर्णे) सर्वलक्षण संपूर्णे चक्रायुधे, गरूड वाहने हे वेष्णवी देवी जलादि अर्घं ।।५।।

वराहका वाहन पर बेठी, हल का आयुध धारण करो।
नीलवर्ण की आभा सोहे, नाम वाराही हे माता ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता।
सर्व रोग की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ।।६।।

ॐ ह्रीं नीलवर्णे वराहवाहने हलायुधे सचिन्ह परिवारे हे वाराहि देवी जलादि अर्घं ।।६।।

सुवर्ण वर्ण को धारण करके, वज्र का आयुध से सोहे।
हस्ति वाहन पर आरुढ़ होकर, नाम इन्द्राणी से सोहे ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता।
रुद्र भाव की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ।।७।।

ॐ ह्रीं सुवर्ण वर्णे वज्रायुधे गजाधिवाहने हे इन्द्राणी देवी जलादि अर्घं ।।७।।

अरुण वर्ण को धारण करके, व्याघ्र वाहन पर सोहे।
शक्ति शस्त्र को धारण करके, चामुण्डा हे नाम सोहे ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता।
सर्व उपद्रव शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ।।८।।

ॐ ह्रीं अरुण वर्णे व्याघ्रवाहने चक्रायुध धारणे हे चामुण्डा देवी जलादि अर्घं ।।८।।

श्वेतवर्ण को धारण करके, मूषक वाहन पर सोहे।
गदायुध को धारण करके, नाम लक्ष्मी हे सोहे ।।
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता।
सर्वरक्षा को करणे आये, शरण तेरी माता ।।९।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे व्याघ्र वाहने चक्रायुधे चामुण्डा देवी जलादि अर्घं ।।९।।

अत्यन्त भक्ति सहित हो, आवो जिनवर पास।
अष्ट मातृ का पूजहूं, करो विघ्न सब शान्त ।।१०।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अष्ट मातृका देवी समूहेभ्यो पूर्णं अर्घं ।।१०।।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

पंचम कोष्टोपरी अष्ट जयाद्य देवता पूजा

हाथों में ले पुष्प को आया तेरे पास ।
पुष्पाञ्जलि मैं करत हूं, शान्ति दे दो मात ।।

मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मँगाऊं ।
जया देवी माताजी को, मन में अर्घ चढ़ाऊँ ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रां क्रों जयादेविभ्यो जलादि अर्घं समर्पयामि ।।१।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
विजया देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रां क्रों विजयादेविभ्यो जलादि अर्घं ।।२।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
अजिता देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रां क्रों अजितादेविभ्यो जलादि अर्घं ।।३।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
अपराजीता देवी को में, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रां क्रों अपराजीतादेविभ्यो जलादि अर्घं ।।४।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
जंभा देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रां क्रौं जंभादेविभ्यो जलादि अर्घं ।।५।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
मोहादेवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रां क्रों मोहादेविभ्यो जलादि अर्घं ।।६।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ।
स्तंभा देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।७।।

ॐ ह्रीं आं क्रौं स्तंभादेविभ्यो जलादि अर्घं ।।७।।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ।
स्तंभिनी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ।।८।।

ॐ ह्रीं आं क्रों स्तंभिनोदेविभ्यो जलादि अर्घं ।।८।।

जयादि अष्ट देवियों का अर्घ चढ़ाऊँ आज।
सर्व विघ्नों की शान्ति हो, धर्म का फल मिल जाय ।।९।।

ॐ ह्रीं आं क्रों जयादि अष्ट देव्येभ्यो जलादि अर्घं ।।९।।

शान्ति धारा पुष्पाञ्जलि।

जाप्य मन्त्र

१०८ लोंगों से।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा ।

॥ जयमाला ॥

सुसिद्ध विबुद्ध विबोध विधान, विकसित विश्व विवेक विधान।
विडंबित काम जगज्जय चंड सदा सदयो दय जय कलिकुण्ड ।।१।।

पयोधि पयोधर धीर निनाद, निराकृत दुर्मत दुर्मद वाद।
असत्य पथैक पतता विदण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ।।२।।

निराकुल निर्मल शील गिरीश, निराश निरंजन जिनवर शिह।
विपाटित दुष्ट मद द्विप गंड सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ।।३।।

कषाय चतुष्टय काष्ट कुठार, निरामय नित्य नरा नर सार ।
विदीर्ण घना घन विघ्न करंड, सदा सदयोदर जय कलिकुण्ड ।।४।।

अनल्प विकल्प विलीन विकल्प विशल्य विशूल विसर्प विदर्प ।
विरोग विभोग विखंड विमूंड सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ।।५।।

कणीश नरेश सुरेश महेश दिनेश शुभेष गणेश गुणेश ।
चिदर्क विकासित शतदल तुंड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ।।६।।

विशोक विशंक विमुक्त कलंक विकसित विश्व विदूरित पंक ।
कला कल केवल चिन्मय पिंड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ।।७।।

विखंडित मोह मही रुह कंद, वर प्रद सत्पद मंडल दण्ड ।
त्रिदंड विखण्डित माय सखण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ।।८।।

दोहा

कलिकुण्ड जयमालिका अर्घ चढ़ाओ आज ।
सुख शान्ति की प्राप्ति हो, मोक्षपुरी मिल जाय ।।

ॐ ह्रां क्रौं ह्रीं कलिकुण्ड दण्ड यंत्राय जयमाला पूर्ण अर्घं ।।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् । फिर विसर्जन करदे ।। इति ।

अणिन्दा ग्राम एक क्षेत्र है अतिशय पार्श्वनाथ ।
कलिकुण्ड विधान लिखा, चरण बैठ भगवान ।।

भविक जन पूजा करो, सर्व विघ्न पलाय ।
सुख शान्ति सभी मिले, आनन्द हो जाय ।।

पद्मनन्दी आचार्य का, देखा विधान यह सार ।
उसही को देख लिखा, उसही के अनुसार ।।

कुन्थुसागर आचार्य ने, लिखा विधान यह जान।
आग्रह था क्षेमा बेटी का, पूजा बनी महान् ।।

भूल चूक सब माफ हो, मैं अज्ञानी जान।
छोटा मुँह बड़ी बात है भक्ति मात्र है जान।।

।। इति ।।

।। समाप्तम् ।।

" कलिकुण्ड विधान "